International Journal of Engineering and Science Invention (IJESI)
ISSN (Online): 2319-6734, ISSN (Print): 2319-6726
www.ijesi.org ||Volume 9 Issue 9 Series II || September 2020 || PP 60-77

शेखावाटी में पर्यटन स्थलों का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. भवानी प्रसाद शर्मा,
सह आचार्य, भूगोल विभाग,
एस. एस. जैन सुबोध स्ववित्तपोषित स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामबाग सर्किल, जयपुर *(राज.) 302004*

शोध सारांश
आज पर्यटन विश्व का एक विकसित उद्योग है। वर्तमान समय में समाज को पर्यटन से अनेक प्रकार के सामाजिक एवं आर्थिक लाभ मिलते रहे हैं। इसलिए वर्तमान समय में प्रत्येक देश की शासन प्रणाली अपने विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है और नवीनतम उपलब्धियों के लिए लगातार नए आयाम खोजे जा रहे हैं। पर्यटन मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है जिसका आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय महत्त्व है। स्थानिक अन्तःक्रिया और पारस्परिक सहसम्बन्ध, पर्यटन के प्रमुख अवयव हैं। पर्यटन हेतु उत्प्रेरक तत्त्वों में शैक्षिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, मानव जातीय, स्वास्थ्य, खेलकूद, विश्राम आनन्द आदि अभिप्रेरणा पर्यटन में प्रमुख होती है।
पुरा ऐतिहासिक काल में मनुष्य यात्रा की अभिरूचि रखता था। आज उसी परम्परा के अनुरूप पर्यटन को विश्व स्तर पर मनुष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षिक तथा आर्थिक व्यवहार के सन्दर्भ में महत्त्व प्राप्त हुआ है। वर्तमान में यह विश्व के उदीयमान उद्योगों में एक माना गया है। पर्यटन न केवल बिना किसी वस्तु के निर्यात के करोड़ों रूपये की विदेशी मुद्रा संचय करा देता है, बल्कि सभ्यता व संस्कृति को भी सुदूर क्षेत्रों एवं विदेशों में बिना किसी अतिरिक्त व्यर्थ व श्रम के पहुँचा देता है। आर्थिक परिक्षेत्र में पर्यटन में स्थानीय अन्तः क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।
विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ ही साथ औद्योगिकी, आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति उच्च आय एवं समय मितव्ययिता ने लोगों का ध्यान पर्यटन की ओर आकर्षित किया और उच्च शिक्षा के प्रसार के कारण भी लोगों की रूचि पर्यटन में बढ़ी। पर्यटन में बढ़ती जन रूचि को देखते हुए सरकार द्वारा परिवहन के साधनों को भी सहज सुलभ कराया गया। पर्यटकों की संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि होती जा रही है।
मुख्य बिन्दु :- शेखावाटी के प्रमुख पर्यटन स्थल, ऐतिहासिक पर्यटन स्थल, सांस्कृतिक पर्यटन स्थल, शेखावाटी की हवेलियां, धार्मिक पर्यटन स्थल, प्रमुख मेले एवं निष्कर्ष ।

परिचय :-

किसी भी प्रदेश की धार्मिक मान्यता, भाषा, आचार-विचार, सामाजिक रीति-रिवाज आदि पर वहाँ की सांस्कृतिक धरोहर निर्भर करती है। शेखावाटी क्षेत्र की संस्कृति अपने आप में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। 18 वीं और 19 वीं शताब्दी में गढ़ जिन्हें किले भी कहा जाता था यहाँ के विभिन्न ठिकानेदारों द्वारा बनाये गये जो कि सामरिक और स्थापत्य कला की दृष्टि से बड़े ही महत्वपूर्ण है। यहाँ प्रचुर मात्रा में बनी हुई बावड़ियाँ, कुएँ और तालाब धार्मिक भावना के प्रतीक है, दूसरी ओर मंदिर, मस्जिद उस समय की जनकल्याणकारी भावना के भी द्योतक है।

शेखावाटी क्षेत्र बने में अधिकतर गढ़, कुएँ, छतरियाँ, बावडियाँ और तालाब 18 वीं और 19 वीं शताब्दी में ही बने है इससे स्पष्ट है कि ठिकानेदारां, सेठों को अपने-अपने क्षेत्र में कला, साहित्य के प्रति गहन रूचि थी। शेखावाटी क्षेत्र के किलो में बने हुए विशाल द्वार, गुम्बदाकार बरामदे और लदाव की छतें तथा चारों ओर बनी हुई ऊँची दीवार के चारों कोनां पर बने हुए बड़े बुर्ज तथा भीतरी भाग में बने अनेक विशाल हॉल, सुन्दर चित्रकारी सल्तनतकालीन और मुगलकालीन स्थापत्य कला के प्रभाव के द्योतक है। गढ़ों की बनावट में तराशा हुआ पत्थर तथा सुन्दर चिकना चूने का पलस्तर आधुनिक कला का परिचायक है। हवेलियों के बाहरी भाग पर पनघट, खेलकूद, ऊँटों की दौड़ के दृश्य आदि ग्रामीण लोककला की ओर इंगित करते है। स्थापत्य कला की दृष्टि से शेखावाटी क्षेत्र के गढ़ बड़े ही महत्वपूर्ण है। गढ़ो के सामने विशाल ऊँचे दरवाजे मुगलकालीन शैली के परिचायक है। अधिकतर गढ़ ऊंचे स्थानों तथा पहाड़ों पर बने हुये है। ये ऊँचे स्थानों पर सुरक्षा की दृष्टि से बनाये गये है। इन गढ़ों के चारों तरफ मीनारें, ऊँची दीवारें तथा चारों तरफ चौड़ी खाई और उसके भी दोनों ओर पक्की दिवारें बनी हुई है। गढ़ के भीतरी भाग जो पूर्णतया सुरक्षित होते थे जो शासकों के निवास और रनिवास के रूप में काम में आते थे। अनेक गढ़ों पर दुर्गा माता या गोपीनाथ जी के मंदिर भी है। इन गढ़ां की बनावट में मध्यकालीन तथा आधुनिक कला का मिश्रण है। शेखावत शासकां तथा उनके वंशजो द्वारा शेखावाटी क्षेत्र के गढ़ों का निर्माण कराया गया है।

शेखावाटी क्षेत्र के वास्तुकला के प्रतिमानों में दुर्गों का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। सामान्यतः दुर्ग प्राचीर और बुर्जो से मिलकर बनते है। शेखावाटी क्षेत्र के मुख्य दुर्गों में अखयगढ़, देवगढ़, लक्ष्मणगढ़, डूंडलोद किला, नवलगढ़ दुर्ग, मंडावा किला, बादलगढ़ किला, दांतारामगढ़ दुर्ग,

जोरावरगढ़, खेतड़ी के दुर्ग आते है। विश्व के पर्यटन मानचित्र पर राजस्थान प्रदेश का नाम बहुचर्चित है। शेखावाटी क्षेत्र के कई स्थान पर्यटन की दृष्टि से गौरवशाली रहे है।

अध्ययन क्षेत्र में वीरों के ऐतिहासिक स्मारक, राजप्रसाद, किले, तथा सेठ, साहूकारों एवं कला प्रेमियों की हवेलियाँ आदि की शिल्प कला, सौन्दर्यता, बनावट आदि देशी-विदेशी पर्यटकां को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए प्रमुख है। प्राचीन धरोहरों ने जो पुरात्तव महत्व की हैं, पर्यटकों को लुभाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजस्थान पर्यटकां के आकर्षण का केन्द्र है। शेखावाटी क्षेत्र में गढ़, किलों, मंदिरों, ऐतिहासिक स्मारकों, धार्मिक प्रतिष्ठानों से लेकर जन साधारण के भवनों पर शिल्प कलाकृतियों का खजाना ही शिल्पकारों ने कुरेदकर रख दिया है। शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियों व गढ़ों में जालीदार झरोखों, कंगूरों की भरमार है। शेखावाटी क्षेत्र की प्रसिद्ध हवेलियाँ शिल्प कलाकृतियों का अजीब अजायबघर बनी हुई है जिसे देखकर पर्यटक इन पर की गई शिल्प कलाकृतियों की मुक्त कंठ से प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। यहाँ बहुत सारे सुन्दर मंदिर, छतरियाँ, किले, जोहड़े और कुएँ बने हुए है जिन पर बहुत सारे विभिन्न विषयों को लेकर बहुरंगी भितिचित्र है। आज के कारीगर तो इनकी निर्माण कला से अनभिज्ञ ही है। स्थापना की दृष्टि से इन सबका विशेष महत्व है जैसे छतरी का मुख्य गुम्बद शिवालय के ऊपर बनाया जाता है इसी गुम्बद में उपयुक्त स्थान पर लाल रंग का पलस्तर पोतकर लोहे की कलम से इनके निर्माण का उद्देश्य, निर्माण समय, निर्माता का नाम एवं उस वक्त के भाव आदि उत्कीर्ण करवाये जाने की प्रथा थी लेकिन ऐसे भित्ति लेख कुछ स्थानों पर मिलते है और कुछ पर नहीं। शेखावाटी क्षेत्र के नगरों में प्राचीन काल में बनी विशालकाय छतरियों का बड़ा महत्व रहा है। इनमें आवास की व्यवस्था की जाती थी क्योंकि उन दिनों आधुनिक ढंग के विवाह भवन आदि नहीं होते थे अतः विवाह में आने वाली बारातों को इन्हीं छतरियों में ठहराया जाता था। बारात में आने वाले ऊँट, घोड़े भी इन्हीं छतरियों के पास ठहर जाते थे क्योंकी इन छतरियों के मूल निर्माण के अतिरिक्त खुला स्थान भी होता था।

शेखावाटी क्षेत्र मंदिर व मस्जिद स्थापत्य की दृष्टि से समृद्ध है। मुस्लिम धर्मावलम्बियों और हिन्दू दोनों के मंदिर निर्माण में समन्वय की भावना दिखाई देती है। झुंझुनूं का राणी सती, मनसा माता, लोहार्गल के मंदिर व नरहड़ दरगाह तथा सीकर में जीणमाता, शाकम्भरी माता, खाटू श्यामजी, हर्ष मंदिर विश्व प्रसिद्ध है। पिलानी में म्युजियम है जो पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। विभिन्न विशेषताओं से सुसज्जित यहाँ की भव्य ऐतिहासिक धरोहर न केवल जिले की सुन्दरता बढ़ाती है बल्कि यहाँ के प्रसिद्ध व्यापारियों की कहानियाँ भी बताती है जिन्हें देखने के लिए देशी-विदेशी पर्यटक समय-समय पर यहाँ आते हैं। आज लाखों रूपये में भी इस प्रकार के भव्य स्थलों का निर्माण होना कठिन है, लेकिन अब उचित रख-रखाव और सार-संभाल के अभाव मे ये ऐतिहासिक धरोहर अधोगति को प्राप्त हो रही हैं।

मानव सभ्यता का इतिहास बहुत पुराना है। यह निश्चित तथ्य है कि मानव ने अपने और समाज की रक्षा हेतु सुदृढ़ साधन अपनाये परन्तु आज तक कोई निश्चित तिथि इसके लिए निर्धारित नहीं हो सकी। गढ़, बावड़ियाँ व हवलियों, छतरियों का निर्माण भी इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। अपने मुखिया और उसकी प्रजा की रक्षा हेतु इनके निर्माण का कार्य कब से प्रारम्भ हुआ यह नहीं कहा जा सकता। शेखावाटी क्षेत्र में गढ़ों के निर्माण राजाओं तथा उनके वंशजां द्वारा करावाये गये है।

स्थिति एवं विस्तार :-

शेखावाटी प्रदेश में सीकर एवं झुन्झुनूं जिले की सभी तहसीलों को सम्मिलित किया है। झुन्झुनूं के समान सीकर भी जयपुर राज्य का भाग रहा है। यहाँ के शासकों ने शेखावाटी को अलग राज्य बनाने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु सफल न हो सके तथा यह मुगल साम्राज्य का अंग और जयपुर राज्य के अन्तर्गत ही रहा।

अध्ययन का क्षेत्र शेखावाटी क्षेत्र लिया गया है। शेखावाटी का नाम अति प्राचीन नहीं है। विक्रमी संवत् 1502 (1445 ई.) में राव शेखा में इस इलाके को जीत कर एक छोटे से राज्य की स्थापना की तथा शेखा के वंशज शेखावत कहलाये, जिन्होनें सीकरवाटी व झुन्झुनूंवाटी पर अधिकार कर विस्तृत राज्य स्थापित किया, जो शेखावाटी नाम से प्रसिद्ध हुआ। राजस्थान में झुन्झुनूँ और सीकर जिला पूर्णतया जबकि चुरू जिले का कुछ भाग शेखावाटी अंचल में आते हैं।

शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति 27°21’ से 28°34’ उत्तरी अक्षांश एवं 74°41’ पूर्व से 76°06’ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थिति है। इस प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 13,784 वर्ग किमी है। अध्ययन क्षेत्र में सीकर की नौ तहसीलें, झुझनू की आठ तहसीलें शामिल है शेखावाटी क्षेत्र के उत्तर-पूर्व में हरियाणा, पूर्व में मेवात क्षेत्र, उत्तर-पश्चिम जांगल प्रदेश, दक्षिण-पश्चिम में मारवाड़ क्षेत्र, दक्षिण-पूर्व में ढूँढाड़ (जयपुर), दक्षिण में अजमेर क्षेत्र पड़ता है। यहाँ का पूर्वी भाग में अरावली पर्वत तथा पश्चिम भाग में मरूस्थल का विस्तार है। यहाँ आन्तरिक अपवाह प्रणाली मौजूद है, कांतली यहाँ की मुख्य नदी हैं।

यहाँ अर्द्धशुष्क जलवायु पाई जाती है जिसमें स्टेपी प्रकार की वनस्पति मिलती है। जिसमें खेजड़ी बबूल, बैर, कैर इत्यादि यहा के मुख्य वृक्ष है। यहाँ गर्मियों के दिनों में दक्षिण-पश्चिम तथा पश्चिम से गर्म हवाए चलती है जिन्हें ‘लू’ कहते है। इस क्षेत्र में मरूस्थल का विस्तार होने के कारण यहाँ भूरी रेतीली मिट्टी का विस्तार है जिसमें खरीफ के मौसम में बाजरा, मोठ, मूंग, ग्वार तथा रबी के मौसम में गेहूँ सरसों मैथी इत्यादि फसलें ली जाती है यहा वर्षा का वार्षिक औसत 25 से 50 सेमी तथा तापमान गर्मियों में अधिकतम 450 से 480 तक तथा

मानचित्र संख्या – 2.1
शेखावाटी प्रदेश अवस्थिति मानचित्र

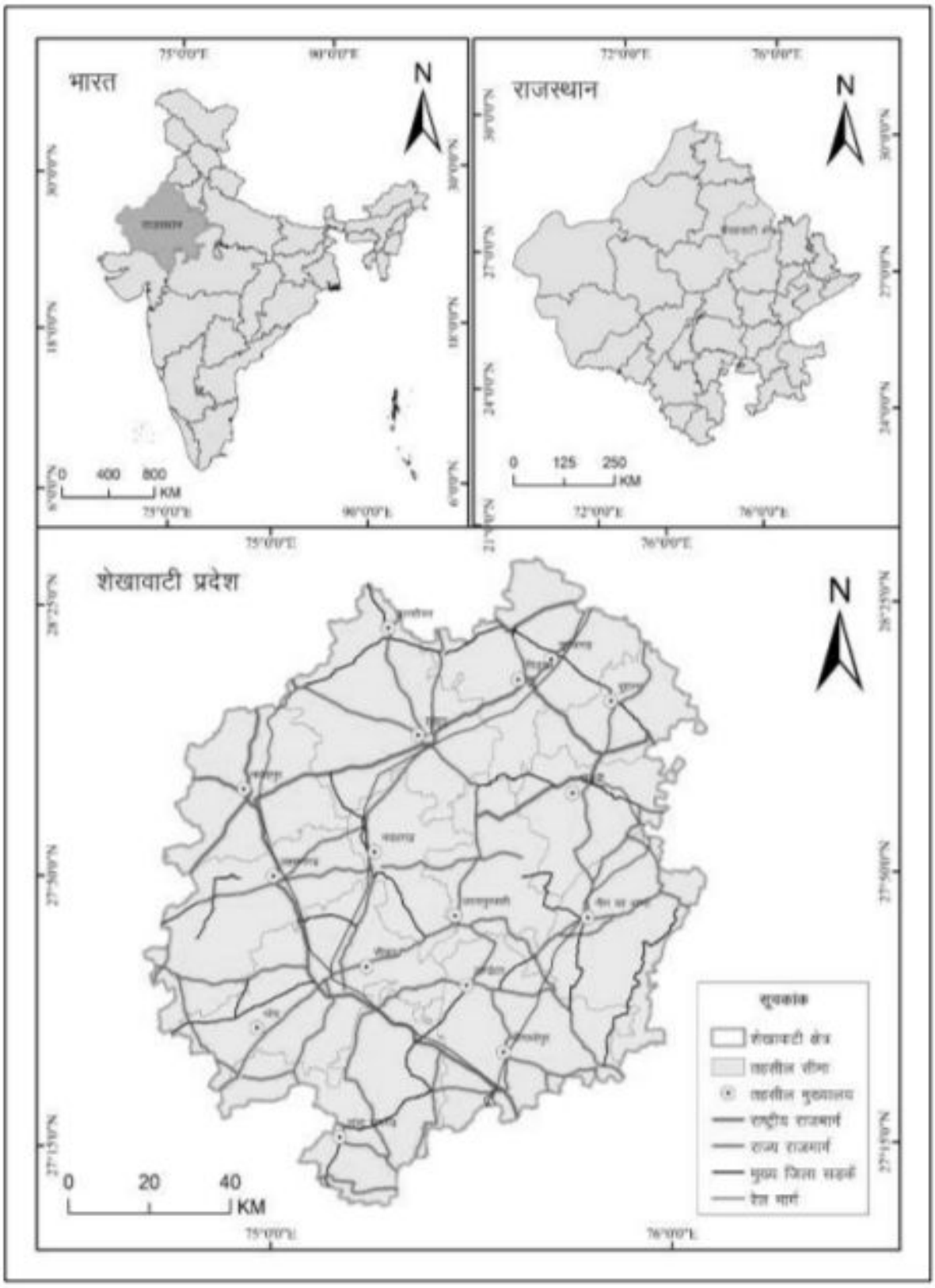

सर्दियों में 40 से 60 से0 से नीचे चले जाते है। फतेहपुर (सीकर) तथा पिलानी (झुझनूँ) यहाँ के सबसे ठण्डे स्थान है।

यहाँ से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या -11 (52) तथा 65 गुजरते है। इस क्षेत्र में झुंझनूँ जिले की कुल जनसंख्या 21,37,045, लिंगानुपात - 950, साक्षरता दर 74.13 प्रतिशत व जनघनत्व 361 प्रतिव्यक्ति तथा सीकर की जनसंख्या 26,77,737, लिंगानुपात- 944, साक्षरता दर 72.98 प्रतिशत व जनघनत्व 346 प्रतिव्यक्ति किमी. है।

शेखावाटी राजस्थान के स्टेपी मरूस्थल-प्रदेश में सम्मिलित है, जो अरावली श्रेणी के पश्चिम भाग में 300 मि.मी. से 500 मि.मी. वर्षा वाले क्षेत्र के उत्तर-पूर्व दिशा में विस्तृत है। यह प्रदेश उष्ण मरूस्थल प्रदेश की अपेक्षा चट्टानी मरूस्थल के बलुआ क्षेत्र में विलीन हो जाता है। स्टेपी मरूस्थल का उत्तरी-पूर्वी उत्थिल क्षेत्र अपेक्षाकृत कम बलुआ है, जिसमें पूर्वी सीकर एवं झुन्झुनूं की तहसीलें सम्मिलित की जाती है। यहाँ की तीव्र ढ़ालों पर प्रवाहित जल की लगातार बहाव क्रिया ने बालू-जमावों को कम कर भूमि को समतल कर दिया है, जहाँ अपेक्षाकृत मानव-बसाव अधिक केन्द्रित है।

ऐतिहासिक दृष्टि से शेखावाटी प्रदेश में सीकर व झुन्झुनूं जिले सम्मिलित किये जाते है। पिलानी के निकट नरहड़ में वि.स. 1215 के शिलालेख से स्पष्ट होता है कि यह प्रदेश अजमेर व बिसलदेव चौहान राजपूतों के शासन में था। पृथ्वीराज तृतीय की हार के पश्चात यह मुस्लिम शासकों के अधीन आ गया। आइन-ए-अकबरी के अनुसार फतेहपुर, झुन्झुनूं और नरहड़ अजमेर पूर्व के भाग थे। राव शेखाजी (1423-25) ने कछवाहों की शेखावत शाखा की स्थापना की जिसका केन्द्र उदयपुरवाटी (तोरावाटी) था। इस प्रदेश पर मिर्जाराजा जयसिंह का नियंत्रण था। झुन्झुनूं रियासत अन्त में 1949 में राजस्थान राज्य का अंग बन गयी।

उद्देश्य :-

1. शेखावाटी में पर्यटन के स्थलों का भौगोलिक अध्ययन करना ।

2. शेखावाटी में पर्यटन की विकास के स्पष्ट करना ।

परिकल्पना :-

1. अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी में पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है ।

आँकड़ो का संग्रह

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आँकड़ो का उपयोग सरकारी व गैर सरकारी रिपोर्ट, पर्यटन विभाग व जिला कलेक्टर कार्यालय से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया गया है।

शेखावाटी के पर्यटन स्थल :-

शेखावाटी क्षेत्र में मुख्य रूप से राजस्थान के सीकर तथा झुंझुनूं का क्षेत्र सम्मिलित है, यह क्षेत्र सांस्कृतिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, प्राकृतिक पर्यटन व धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से विश्व मानचित्र पर अपनी अलग पहचान रखता है। शेखावाटी क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थलां का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

ऐतिहासिक पर्यटन-

ऐसे पर्यटन स्थल जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, जिनमें इतिहास की झलक देखने को मिलती है ऐतिहासिक पर्यटन में सम्मिलित किया जाता है, जैसे किले, महल, बावड़ियाँ, हवेलियाँ, स्मारक, छतरीयाँ, सभ्यताओं के अवशेष इत्यादि। राजस्थान हमेशा अपनी समृद्ध विरासत और प्राचीन संस्कृति के लिए प्रसिद्ध रहा है, इसलिए राजस्थान में विरासत पर्यटन की शुरुआत लंबे समय से अनुमानित थी। शेखावाटी क्षेत्र अपनी गौरवमयी अतीत और सांस्कृतिक विविधता के मिश्रण को संजोए हुए है। जो प्रतिवर्ष लाखों पर्यटकों को अपनी विरासत पर्यटन आकर्षणों के लिए आकर्षित करता है,राजस्थान सरकार और पर्यटन विभाग विरासत पर्यटन को प्रोत्साहित करते हैं शेखावाटी क्षेत्र में प्रसिद्ध लोकप्रिय विरासत पर्यटन स्थल निम्न हैः-

किले-

शेखावाटी क्षेत्र अपने दुर्गों के लिए प्रसिद्ध है,जो पर्वत शिखरों पर बने हुए है। इनका निर्माण अपने मुखिया और उसकी प्रजा की रक्षा हेतु राजाओं तथा उनके वंशजां द्वारा करावाया गया। यहाँ स्थित मुख्य किले निम्न है

लक्ष्मणगढ़ दुर्ग

लक्ष्मणगढ़ दुर्ग अत्यधिक पुराना पहाड़ी दुर्ग है, जो सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ कस्बे में स्थित है। लक्ष्मणगढ़ दुर्ग सीकर से 30 किलोमीटर

की दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-52 पर स्थित है, इसका निर्माण सीकर के राजा लक्ष्मण सिंह ने लक्ष्मणगढ़ की पहाड़ी पर 1862 में कराया और 1864 में इस दुर्ग के चारों ओर लक्ष्मणगढ़ शहर बसाया। मंदिर परिसर में बना घंटाघर तथा चार चौक की हवेली अपनी बनावट स्थापत्य और भिति चित्रों के कारण आकर्षण का केंद्र है, इसके अलावा यहाँ राधिका मुरली मनोहर मंदिर व डाकनियों का मंदिर अन्य प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है।

दांतारामगढ़ दुर्ग

सीकर जिला मुख्यालय से 40 किलोमीटर दूर यह दुर्ग दांतारामगढ़ कस्बे में स्थित है। यहाँ तक पहुँचने के लिए एक घंटा और 30 मिनट लगते हैं, समय-समय पर सीकर बस डिपो से दांतारामगढ़ के लिए नियमित बस सेवाएँ संचालित है।

देवगढ़ का किला

सीकर से 13 किलोमीटर की दूरी पर देवगढ़ किला एक ऐतिहासिक किला है। यह पहाड़ की चोटी पर स्थित है। हालांकि रखरखाव के अभाव मे अब यह एक खंडहर बन चुका है। लेकिन अभी भी इस किले का काफी हिस्सा सही हालत में है। इसमें पुराने समय की एक अच्छी कारीगरी देखने को मिलती है।

डूंडलोद किला

झुंझुनूं से उत्तर-पश्चिम में 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सार्दुल सिंह के पुत्र केसरी सिंह ने 1807 विक्रम संवत में इस किले का निर्माण करवाया तथा बाद में समय-समय पर इस गढ़ में महलों निर्माण हुआ। विद्वान रावल हरनाथ सिंह का यहाँ दीवाने खाने में दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह है। किले के महल अपनी कला के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान में यह हैरिटेज होटल में तब्दील है।

नवलगढ़ दुर्ग

नवलगढ़ दुर्ग झुंझुनूं जिले के नवलगढ़ कस्बे में स्थित है। जो सीकर झुंझुनूं राज्यीय -राजमार्ग पर स्थित है, इसका निर्माण नवलगढ़-मंडावा प्रांत के शासक नवलसिंह द्वारा 18वीं सदी में करवाया गया। यहाँ के मुख्य आकर्षण रूपनिवास महल व शीश महल हैं।

मंडावा किला

यह झुंझुनूं के मंडावा कस्बे में स्थित है। मंडावा का किला का निर्माण 1755 में ठाकुर नवलसिंह द्वारा कराया गया। यह किला भगवान श्रीकृष्ण व उसकी गायों के चित्र तथा उत्तम नकाशियों के लिए प्रसिद्ध है। यह वर्तमान में एक हैरिटेज होटल में तब्दील हो चुका है। मंडावा का किला झुंझुनूं जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर झुंझुनूं-फतेहपुर मार्ग पर एन एच-11 पर स्थित है।

बादलगढ़ किला

शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनूं जिले में स्थित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल है, इस किले का निर्माण 16 वीं शताब्दी की शुरुआत में एक मुस्लिम शासक नवाब फजल खान के शासन में किया गया था। बादलगढ़ किला एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है, और इसके आस-पास का वातावरण बहुत ही हरा-भरा है।

हवेलियाँ-

शेखावाटी क्षेत्र में बडे- बड़े सेठ साहूकारों तथा धनी व्यक्तियों ने अपने सफलता और समृद्धि को प्रमाणित करने के उद्देश्य से यहाँ सुन्दर व आकर्षक भित्ति चित्रों से युक्त हवेलियों का निर्माण करवाया। यह हवेलियाँ उनके निवास के काम आती थी, जो कई मंजिला होती थी। शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियाँ भव्य भित्ति चित्रों से युक्त तथा स्थापत्य की दृष्टि से भिन्नता लिए हुए एवं कलात्मक भी हैं। शेखावाटी के रामगढ़ मंडावा, नवलगढ़, रतनगढ़, पिलानी, फतेहपुर, मुकुंदगढ़, झुंझुनूं, महनसर, चूरू, सरदारशहर इत्यादि कस्बों में खड़ी विशाल हवेलियाँ आज भी अपने स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियाँ बरामदों, छज्जों और झरोखों पर बारीक व उम्दा नक्काशी तथा भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

शेखावाटी क्षेत्र की प्रसिद्ध हवेलियों में झुंझुनूं में टिबड़ेवाला की हवेली तथा ईसरदास मोदी की हवेली अपने शिल्प वैभव के कारण अलग ही छवि लिए हुए हैं। मंडावा (झुंझुनूं) में सागरमल लाडिया, रामदेव चौखानी तथा रामनाथ गोयनका की हवेली, डूंडलोद (झुंझुनूं) में सेठ लालचंद गोयनका, चिड़ावा (झुंझुनूं) में बागड़िया की हवेली, डालमिया की हवेली, महनसर (झुंझुनूं) की सोने-चांदी की हवेली, मुकुंदगढ़ (झुंझुनूं) में सेठ राधा कृष्ण एवं केसरदेव कानोडिया की हवेलियाँ लक्ष्मणगढ़ (सीकर) में केडिया एवं राठी की हवेली, चार चौक की हवेली, चेतराम संगनीरिया हवेली, श्योनारायण कायल हवेली प्रसिद्ध हैं, नवलगढ़ (झुंझुनूं) की हवेलियों में भक्तों की हवेली, छोटी हवेली, परशुरामपुरिया हवेली, छाउछरिया हवेली, सेकसरिया हवेली, मोरारका की हवेली एवं पोद्दार हवेली प्रमुख हैं।

शेखावाटी के प्रमुख पर्यटन स्थल

सीकर में गौरीलाल बियानी की हवेली, रामगढ़ (सीकर) में ताराचंद रूईया, फतेहपुर (सीकर) में नंदलाल देवड़ा, कन्हैयालाल गोयनका की हवेलियाँ भी भित्ति चित्रों के कारण प्रसिद्ध है। चूरू की हवेलियों में मालजी का कमरा, रामनिवास गोयनका की हवेली, मंत्रियों की हवेली इत्यादि प्रसिद्ध है। चूरू में सुराणा की हवेली में 1100 दरवाजे एवं खिड़कियाँ हैं। शेखावाटी की हवेलियाँ अपनी विशालता और भिति चित्रकारी के लिए विश्व में प्रसिद्ध है, इन्हें देखने के लिए साल भर देशी- विदेशी पर्यटकों का तांता लगा रहता है। शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियों के अधिकांश भित्ति चित्र लगभग 125 से 150 वर्ष पूर्व के बने हैं। हवेलियों में अराइस की आलागीला पद्धति और दीवार की सूखी सतह पर भी चित्रांकन मिलते हैं। अराइस की गीली सतह के चित्रों में स्केच (कुराई) तकनीक का सुंदर प्रयोग किया गया है। अंदर का हिस्सा आज भी सुरक्षित व सजीव है।

इन भित्ति चित्रों को दीवार पर चूने का प्लास्टर करते वक्त बनाया जाता था, पत्थर की पिसाई कर उन्हें पेड़- पौधों की पत्तियों और प्राकृतिक रंगों के साथ गिले प्लास्टर में मिलाकर मिलाकर तालमेल से पेंटिंग को हवेली की दीवारों पर उकेरा जाता था, गिले प्लास्टर में यह रंग पूरी तरह समा जाते थे, इस तरह के रंग फैलने की बजाए अंदर तक जड़ पकड़ लेते थे, तभी तो 200 वर्ष पुरानी ये पेंटिंग आज भी नयनाभिराम है, अपनी चित्रित हवेलियों, महलों एवं अन्य कई ऐतिहासिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध शेखावाटी को ''ऑपन आर्ट गैलरी ऑफ राजस्थान'' के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ की हवेलियों के रंग शानो शौकत के प्रतीक हैं। शेखावाटी क्षेत्र की निम्न हवेलियाँ प्रसिद्ध हैं-

नवलगढ़ की हवेलियाँ

18वीं सदी में ठाकुर नवलसिंह ने इस कस्बे की स्थापना की। जो आज राजस्थान के शेखावाटी प्रांत में स्थित है। नवलसिंह शेखावाटी के नवलगढ़ और मंडावा प्रांत के साथ शासक थे। नवलगढ़ की हवेलियों पर चित्रकारी बहुत ही सुंदर कला का नमूना है। यहाँ 1920 में बनी आनंदीलाल पोदार की हवेली और बाला किला जिसकी दीवारों पर लोक कहानियाँ चित्रित है, जो सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। नवलगढ़ में तकरीबन 700 छोटी-बड़ी हवेलियाँ हैं। अगर सिर्फ भव्य और बड़ी हवेलियों की बात करें तो भी 200 का आंकड़ा तो पार हो ही जाएगा। दीवारों पर उकरे रंग, छत्रियों पर छितरे रंग, छज्जों में छिपते रंग, आलो में खोए रंग, राजा रंग, दासी रंग, सैनिक रंग, सेठिया रंग, जितने रंग उतनी हवेलियाँ जितनी हवेलियाँ उतनी कलाकारी और जितनी कलाकारी उतनी कहानियां। मोरारका की हवेली, पोदार की हवेली, सिंघानिया, हेमराज की हवेली, हवेली, गोयनका की हवेली, जबलपुर वालों की हवेली, जोधपुर वालों की हवेली, कोलकाता वालों की हवेली, सेठजी की हवेल, सूबेदार की हवेली, राजा की हवेली, हर मौसम हवेली इत्यादि यहाँ की पहचान है।

अलसीसर और मलसीसर की हवेलियाँ

झुंझुनूं जिले के दो शहर हैं, जो शेखावाटी प्रांत के उत्तरी दिशा में स्थित है, इन शहरों का निर्माण 18 वीं सदी के मध्य या अंत में हुआ था। इन शहरों की हवेलियों पर की गई रंग बिरंगी चित्रकला बहुत उत्तम और सुंदर है, जिन्हें देखने पर्यटक दूर-दूर से आते हैं, झुंझुनूं से केवल 27 किलोमीटर दूर अलसीसर शहर की चित्रित हवेलियाँ और किले इस शहर को लोकप्रिय बनाते हैं, श्रीलाल बहादुर की हवेली, तेजपाल झुनझुनवाला की हवेली, लाख की हवेली, महाली दत्त, केतन हवेली अपनी भित्ति चित्र कला के लिए प्रसिद्ध है। मलसीसर झुंझुनूं से केवल 32 किलोमीटर दूर एक छोटा सा गाँव है, यहाँ सेढमल सरोगी हवेली प्रसिद्ध है।

मंडावा की हवेलियाँ

राजस्थान के झुंझुनूं जिले में और शेखावाटी प्रांत के मध्य में स्थित मंडावा एक छोटा सा कस्बा है, जो जयपुर से उत्तर दिशा में 190 किलोमीटर दूर है, यहाँ रोड मार्ग द्वारा पहुँचा जा सकता है वर्तमान में मंडावा एक फिल्म नगरी के रूप में भी प्रसिद्ध है, क्योंकि यहाँ कई फिल्मों की शूटिंग भी हो चुकी है। इस शहर को राजस्थान की ''ऑपन आर्ट गैलरी'' के रूप में संदर्भित किया गया है, क्योंकि पूरे शेखावाटी क्षेत्र और न केवल मंडावा को आकर्षक हवेली (हवेलियों) से सजाया गया है जिसमें भव्य रूप से चित्रित दीवारें हैं। यहाँ निम्न प्रसिद्ध हवेलियाँ हैं-

1. सेवाराम सर्राफ हवेली

100 साल पुरानी यह हवेली अपनी वास्तुकला और चित्रों के लिए प्रसिद्ध है, यहाँ बॉलीवुड की पीके, बजरंगी भाईजान, मिर्जा साहिबान जैसी कई फिल्मों दृश्यों को भी फिल्माया जा चुका है।

2. रामप्रताप नेमनी हवेली

इस हवेली को हाल ही में एक हेरिटेज होटल में परिवर्तित कर दिया गया है, यहाँ 18 वीं शताब्दी की फ्रिस्कोस पेटिंग का अनुभव होता है।

3. हनुमान प्रसाद गोयनका हवेली

इस हवेली में एक हाथी पर इंद्र देव व भगवान शिव का अपने नंदी बैल पर चित्रण है।

4. गोयनका डबल हवेली

दो फाटकों वाली इस हवेली में हाथियों और घोड़ों का एक स्मारक है। बाहरी दीवारें, बाल्कनियाँ, और ओवरहैंगिंग ऊपरी कहानियाँ पैटर्न और चित्रों के साथ पूरी होती हैं, जो पारंपरिक राजस्थानी महिलाओं और धार्मिक रूपांकनों से लेकर स्टाइलिश टोपी और अन्य विक्टोरियन महीन कपड़े के साथ यूरोपीय हैं।

5. मुरमुरिया हवेली

इस हवेली की दीवारों पर गाड़ियों, कारों, जॉर्ज पंचम और वेनिस की पेंटिंग्स को 1930 के दशक के दौरान इस क्षेत्र के आखिरी काम करने वाले कलाकारों में से एक बालूराम ने अंजाम दिया था। तस्वीरों में - जैसे भगवान कृष्ण अंग्रेजी आंगन में अपनी गायों के साथ और घोड़े पर एक युवा नेहरू, राष्ट्रीय ध्वज पकड़े हुए हैं। इस हवेली में पश्चिम के साथ पूर्व को सम्मिश्रित करते हुए एक अनूठी थीम का उपयोग किया गया है। हवेली में इंजन के ऊपर उड़ने वाली कौवा और रेलवे क्रॉसिंग पर बहुत अधिक गतिविधि के साथ एक लंबी फ्रिजी दिखाई देती है।

6. झुनझुनवाला हवेली

हवेली में मुख्य आंगन के दाईं ओर स्थित हड़ताली सोने की पत्ती चित्रित कमरा है।

7. मोहनलाल सर्राफ हवेली

इस हवेली में एक महाराजा का चित्र जो उसकी मूंछों को दर्शाता है, सुशोभित करता है।

8. गुलाबराय लाडिया हवेली

यह हवेली शहर के दक्षिण में स्थित है, जहाँ बाहरी और भीतरी दीवारों की सजावट शेखावाटी में बेहतरीन है। यहाँ बीसवीं शताब्दी के ब्लू वॉश और कामुक दृश्यों का चित्रण है, जो एक सौ साल पहले प्रचलित थे।

9. आखरम की हवेली

100 से अधिक साल पुरानी यह हवेली शहर के मुख्य बाजार में , सोंथलिया दरवाजा के पास स्थित है।

10. अन्य हवेलियाँ

बंसीधर नयाटिया हवेली, लक्ष्मीनारायण लाडिया हवेली और चोखानी डबल हवेली क्षेत्र की कुछ अन्य चित्रित हवेलियाँ हैं। गोयनका डबल हवेली और मुरमुरिया हवेली के सामने स्थित ठाकुरजी मंदिर में मूर्तियों में तोपों के मुंह से गोली मारे जाने वाले सैनिकों को शामिल किया गया है, जो 1857 के विद्रोह की भयावहता का प्रतिबिंब है।

झुंझुनूं की हवेलियाँ

यहाँ की हवेलियों भी अपनी चित्रकारिता के लिए प्रसिद्ध है। 18वीं सदी में बना खेत्री महल, सेठ ईश्वर दास, मोहन दा मोदी हवेली में की गई चित्रकारिता इसे शेखावाटी की बेहतरीन हवेलियों में से एक बनाती है। 19वीं सदी में बनी टिबड़ेवाला हवेली अपने रंग बिरंगे खिड़कियों के शीशों के लिए मशहूर है।

मुकुंदगढ़ की हवेलियाँ

राजस्थान के झुंझुनूं जिले में स्थित मुकुंदगढ़ शहर की स्थापना 18वीं सदी में राजा मुकुंद सिंह ने की थी, यहाँ की हवेलियाँ अपने दीवान खाने और दीवारों पर की गई भिन्न-भिन्न प्रकार की चित्रकारिता के लिए प्रसिद्ध है, इन हवेलियों के दीवानों में 17वीं और 18वीं सदी की पारिवारिक तस्वीरें, लकड़ी का फर्नीचर, और दीवारों पर टंगी कई चीजें देखने को मिलती है। हवेलियों की छत्रियों पर बने परिवार वालों के चित्र बहुत सुंदर है। विलियम हवेली,घुवाले वालों की हवेली, गंगाबक्स सर्फ हवेली और राजकुमार गनेरी वाला कला केंद्र यहाँ के अन्य भ्रमण स्थल है।

डूंडलोद की हवेलियाँ

राजस्थान के झुंझुनूं जिले के शेखावटी प्रांत के मध्य में स्थित डूंडलोद एक छोटा सा शहर है। यह भी अपनी हवेलियों और महलों के लिए

प्रसिद्ध है। यहाँ की प्रसिद्ध हवेलियों में गोयनका की हवेली मुख्य हैं।

बगड़ की हवेलियाँ

बगड़ राजस्थान के शेखावाटी प्रांत का छोटा सा शहर है,जो अपनी चित्रित हवेलियों के लिए लोकप्रिय है, इनमें से ज्यादातर हवेलियों का निर्माण बीसवीं सदी में शेखावाटी प्रांत के मारवाड़ी व्यापारियों ने किया था, इन हवेलियों पर बनाए गए चित्रों में कहीं-कहीं खरे सोने का इस्तेमाल हुआ है रूंगटा और पीरामल माखरिया हवेली यहाँ की दो मुख्य आकर्षक हवेलियाँ है, जो आज हेरीटेज होटल में परिवर्तित हो गई है।

महनसर की हवेलियाँ

राजस्थान में शेखावाटी क्षेत्र का एक गाँव है। इसकी स्थापना 1768 में शेखावतों की एक शाखा के ठाकुरों द्वारा की गई थी। यह झुंझुनूं जिले में स्थित है, जो झुंझुनूं, चुरू और सीकर जिलों के तिपहिया के पास झुंझुनूं से 40 किमी की दूरी पर हैं, महनसर अपनी समृद्ध और विरासत संस्कृति के लिए जाना जाता है, यह सोने-चाँदी की दुकान के लिए मशहूर है। यह अपने जटिल चित्रों में सोने की पत्ती को शामिल करता है। इस हवेली में तीन गुंबददार छत हैं। रामायण के दृश्यों को बाईं ओर चित्रित किया गया है, केंद्र में विष्णु के अवतार, और कृष्ण के जीवन के दृश्यों को दाईं ओर चित्रित किया गया है। यह अपनी विरासत शराब के लिए काफी लोकप्रिय है जिसे 'महनसर शराब' के रूप में करार दिया गया।

फतेहपुर की हवेलियाँ

फतेहपुर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या -11 पर जयपुर और बीकानेर के मध्य राजस्थान के सीकर जिले में स्थित है, इसकी स्थापना 15वीं सदी के मध्य में कयामखानी के नवाब फतेह खान ने की थी। शेखावाटी के अन्य शहरों की तरह फतेहपुर भी अपनी वैभव और चित्रित हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ 1865 में बनायी गई गोयनका हवेली की दीवारों की चित्रकला इसे यहाँ की अन्य हवेलियों में श्रेष्ठ बनाती है, हवेली की छत पर बनाए गए चित्र बहुत सुंदर हैं, जो इस हवेली की खूबसूरती को निखारते हैं। अलावा यहाँ नंदलाल देवरा, सारोगी और सिंघानिया हवेली मौजूद है।

लक्ष्मणगढ़ की हवेलियाँ

19वीं सदी में सीकर के राजा लक्ष्मण सिंह ने लक्ष्मणगढ़ को बसाया। यहाँ श्योनारायण क्याल हवेली, चार चौक हवेली और राठी हवेली मुख्य आकर्षक स्थल हैं।

शेखावाटी की हवेलियों के रंग पहले संपन्नता के प्रतीक बने, और फिर परंपरा बन गये। खेती करते हुए किसान से लेकर युद्ध करते सेनानी तक, रामायण की कथाओं से लेकर महाभारत के विनाश तक, देवी- देवताओं से लेकर ऋषि-मुनियों तक, पीर बाबा के इलाज से लेकर रेलगाड़ी तक के चित्र हवेली की हर चौखट पर चित्रित हैं। इंसान की कल्पना जितनी उड़ान भर सकती है, इन हवेली की दीवारों पर उड़ी। जो कहानी चितेरे के दिमाग पर असर कर गई वो दीवार पर आ गई, जो बात दिल में दबी रह गई, उसे हवेली की दीवारों पर रंगीन कर दिया गया, लेकिन एक दिन तेज हवा चली और उस रंगीन किताबों के कुछ पन्ने जल्दी जल्दी वक्त के साथ उड़ गए. हवेली मालिकों ने हवेलियाँ छोड़ दीं। कोई विदेश चला गया तो कोई हवेली अनाथ हो गई। जैसे एक हवेली को देखकर दूसरी बनी थी बिल्कुल उसी तरह एक पर ताला जड़ा तो दूसरी हवेलियों के दरवाजे भी धड़ाधड़ बंद होने लगे। अब शेखावाटी की हवेलियों के रंग फीके पड़ने लगे हैं।

महल-

खेतड़ी महल

खेतड़ी महल का निर्माण खेतड़ी महाराजा भोपाल सिंह द्वारा ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए 1770 में करवाया गया था। प्रसिद्ध खेतड़ी महल दरवाजे या खिड़कियों से रहित है, महल की हवामहल जैसी वास्तुकला हैं। इसीलिए इसे शेखावाटी का हवामहल के रूप में जाना जाता है। जयपुर के सवाई प्रताप सिंह ने इसी अनोखी संरचना से प्रेरित होकर 1799 में जयपुर में भव्य और ऐतिहासिक हवामहल का निर्माण करवाया। खेतड़ी महल झुंझुनूं शहर के मध्य स्थित है। यह शेखावाटी कला और स्थापत्य कला के विश्वसनीय उदाहरणों में से एक माना जाता हैं, यह मुख्य रूप से भित्ति चित्रों और उत्तम सारणियों के लिए जाना जाता है। प्रवेश द्वार से महल की विशाल छत के लिए एक लंबा रैंप किसी का भी अग्रणी रूप से ध्यान आकर्षित कर सकता हैं। वास्तव में महल के विभिन्न स्तरों को ऐसे रैंप की एक श्रृंखला के माध्यम से छत के साथ संयुक्त किया गया हैं। छत से दृश्य विशेष रूप से अवलोकन के लायक है। इन चित्रों में से अधिकांश प्राकृतिक पृथ्वी पिगमें ट में थे। खेतड़ी महल के अंदर, एक जटिल डिजाइन मेहराब और खंभे के साथ बहुत बड़ा सुंदर हॉल तलाश कर सकते हैं। 1889 ईस्वी में स्वामी विवेकानंद खेतड़ी पहुंचे थे खेतड़ी महाराजा अजीत सिंह ने विवेकानंद को इसी खेतड़ी महल में ठहराया था।

महल के अधिकांश कमरे मेहराब और स्तंभों की एक अच्छी तरह से डिजाइन श्रृंखला के द्वारा एक दूसरे के माध्यम से जुड़े हुए हैं। ये

मेहराब और कॉलम महल के लिए एक सुंदर सममित दृश्य प्रदान करते हैं। सदियों पुरानी चूना प्लास्टर अपने स्वयं के महिमा के लिए छोड़ दिया गया है और यह एक गुलाबी चमक है। हालांकि खेतड़ी महल पर कोई संदेह नहीं कि यह शेखावाटी युग की दुर्लभ और अद्वितीय संरचनाओं में से एक है, लेकिन इस इमारत की अनदेखी राज्य की एक दुर्भाग्यपूर्ण सच्चाई है। इस तरह की वास्तुकला दुर्लभ है, और जल्द ही लुप्त हो सकती है। इसका रखरखाव करना, इन अनोखी संरचना के संरक्षण और भित्ति चित्र निश्चित रूप से हमारे भारतीय पर्यटन और संस्कृति के लिए अति महत्वपूर्ण है।

बावड़ियाँ -

बावड़ियां हमारी प्राचीन जल संरक्षण प्रणाली का आधार रही है। प्राचीन काल, पूर्वमध्यकाल एवं मध्यकाल सभी में बावडियों के बनाये जाने की जानकारी मिलती है। दूर से देखने पर ये तलघर के रूप में बनी किसी बहुमंजिला हवेली जैसी दृष्टिगत होती हैं।

बावड़ी उन सीढ़ीदार कुँओं या तालाबों को कहते हैं, जिन के जल तक सीढ़ियों के सहारे आसानी से पहुँचा जा सकता है। भारत में बावड़ियों को बनाने और उनके इस्तेमाल का लंबा इतिहास रहा है, ये वो सीढ़ीदार कुएं या तालाब हुआ करते थे, जहाँ से जल भरने के लिए सीढ़ियों का सहारा लेना पड़ता था। शेखावाटी क्षेत्र की प्रसिद्ध बावड़ियां निम्न हैं -

चेतनदास की बावड़ी

इसका निर्माण चेतनदास महाराज ने करवाया था जो 7 मंजिला है तथा कला का एक भव्य नमूना प्रस्तुत करती है, यह झुंझुनूं जिले के नवलगढ़ तहसील में लोहार्गल तीर्थ स्थल के पास स्थित है,यह बावड़ी जाली झरोखों के लिए प्रसिद्ध है। चेतनदास की बावड़ी के समीप ही ज्ञान दास महाराज द्वारा निर्मित ज्ञान दास बावड़ी स्थित है।

अन्य बावड़ियाँ

फतेहपुर (सीकर) में स्थित शाही इमाम बावड़ी, खेतानों की बावड़ी तथा मेड़तनी बावड़ी प्रसिद्ध है। यह बावड़ियाँ अपनी भूल भुलैया कारीगरी के लिए प्रसिद्ध है।

गणेश्वर सभ्यता

गणेश्वर सीकर जिले के नीमकाथाना तहसील में एक गाँव है। गणेश्वर एक तीर्थयात्रा के साथ-साथ एक मजेदार पिकनिक स्थान है। यहाँ सल्फर युक्त गर्म पानी एक बड़ा कुंड है। जिसमें एक प्राकृतिक धारा से निकला गर्म पानी एकत्र किया जाता है। इस कुंड मे स्नान करने का बड़ा महत्व माना जाता है, यह माना जाता है, इसमें स्नान करने से त्वचा रोग ठीक हो जाता है। गणेश्वर क्षेत्रों में खुदाई में 4000 साल पुरानी सभ्यताओं के अवशेषों का खुलासा किया है। यहाँ तांबे की वस्तुओं के साथ लाल मिट्टी के बर्तन मिले हैं। इनके 2500-2000 ईसा पूर्व होने का अनुमान है। गणेश्वर राजस्थान में खेत्री तांबा बेल्ट के सीकर-झुन्झुनूं क्षेत्र की तांबा खानों के पास स्थित है। खुदाई में तांबे की वस्तुओं का पता चला जिसमें तीर हेड, भाले, मछली के हुक, और चूड़ियाँ शामिल हैं। यह हड़प्पा कालीन सभ्यता है, जो सीकर में कांतली नदी के तट पर विकसित हुई। यह तार्ऱ्ब्र युगीन सभ्यता है। प्राचीन समय में यहाँ से कई क्षेत्रों में तांबे का निर्यात होता था। यहाँ से पत्थर के बाँध के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।

बिरला म्यूजियम, पिलानी

पिलानी का बिरला म्यूजियम एशिया के अग्रणी संग्रहालयों में अपना स्थान रखता है, तो निकट ही बिरला हवेली में बिरला परिवार के ऐतिहासिकता से साक्षात्कार कराने वाला संग्रहालय भी दर्शनीय है। पंचवटी परिसर में मातुराम वर्मा द्वारा बनाई और तराशी गई सजीव मूर्तियाँ सैलानियों को आकर्षित करती है, तो संगमरमर से बना सरस्वती मन्दिर भी पर्यटकों के दिल और दिमाग में रच बस जाता है। तकनीकी शिक्षा का राष्ट्रीय सिरमौर पिलानी में भारत सरकार का एक उपक्रम केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) भी है जो देश के विज्ञान और तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है।

प्राकृतिक पर्यटन

पर्यावरण पर्यटन पूरी तरह से पर्यटन के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण है। पर्यावरण पर्यटन संरक्षण और स्थानीय लोगों के लिए फायदेमंद प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना हैं। पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता को सुनिश्चित करते हुए आर्थिक सांस्कृतिक व सामाजिक अवसरों का निर्माण सुनिश्चित करना प्राकृतिक पर्यटन है। शेखावाटी क्षेत्र में हर्ष पर्वत, शाकंभरी, कोट बाँध, रैवासा, कोछोर झील, लोहार्गल कुंड तथा अरावली श्रृंखला में वर्षा के समय बहने वाले झरने प्रमुख प्राकृतिक पर्यटन स्थल के रूप में मौजूद हैं।

हर्ष पर्वत

शेखावाटी के हृदय स्थल सीकर से 16 किलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित हर्ष पर्वत पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, पुरातात्विक दृष्टि से

प्रसिद्ध सुरम्य व रमणीक प्राकृतिक स्थल है। हर्ष पर्वत की ऊंचाई लगभग 3100 फुट हैं। यह सीकर जिले का एकमात्र हिल स्टेशन है, हर्ष पर्वत को राजस्थान के पहले पैराग्लाइडिंग सेंटर निर्माण के लिए भी चिन्हित किया गया हैं। हर्ष पर्वत पर भगवान शंकर का प्राचीन व प्रसिद्ध पंचमुखी प्रतिमा वाला मंदिर भी है, जिसका निर्माण 11 वीं सदी में करवाया गया। हर्ष पर्वत वन औषधियों का भंडार है, हर्ष पर्वत पर विदेशी कंपनी एयरकोन द्वारा पवन चक्कियाँ भी लगाई गई हैं, जिनके सैकड़ों फिट लंबे पंखे पवन वेग से घूमते हुए बड़े लुभावने लगते हैं, करीब 2.25 किलोमीटर लंबी चढ़ाई कर इस प्राकृतिक स्थल तक पहुँचा जा सकता हैं।ं। हर्ष पर्वत का नियंत्रण व स्वामित्व वन विभाग के हाथों में है।

कोट बाँध

कोट बाँध झुन्झुनूं की उदयपुरवाटी तहसील में शाकंभरी मार्ग पर सीकर-झुंझुनूं की सीमा पर स्थित है। अरावली पहाड़ियों के बीच बने 26 फीट भराव क्षमता वाले इस बाँध पर भारी वर्षा के समय चलने वाली चादर का मनोहारी दृश्य देखते ही बनता है, वर्षा के समय दूर-दूर से बड़ी संख्या में लोग यहाँ पिकनिक मनाने आते हैं।

धार्मिक पर्यटन

शाकंभरी माता (सकराय माता)

प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण सुरम्य व हरी- भरी मालखेत घाटी में स्थित है, जो झुंझुनूं के उदयपुरवाटी से 16 किलोमीटर दूर सीकर जिले में स्थित है यहाँ एनएच-52 से रानोली कस्बे से तथा झुंझुनूं के उदयपुरवाटी से सड़क मार्ग से पहुँचा जा सकता है, बरसात के समय यहाँ बहने वाले झरने अलग ही आनंद की अनुभूति कराते हैं, जहाँ बड़ी मात्रा में पर्यटक प्राकृतिक पहाड़ियों निहारने पहुँचते हैं। यहाँ बहने वाले आम्रकुंज और निर्मल जल का झरना आने वाले पर्यटकों का मन मोहित कर देते हैं।

श्री खाटूश्यामजी मंदिर

सीकर शहर से 46 किमी की दूरी पर खाटूश्याम जी मंदिर, सीकर जिले के खाटू गाँव में स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। इस मंदिर पर श्रद्धालुओं की अत्यधिक आस्था है। यहाँ प्रत्येक वर्ष होली के शुभ अवसर पर खाटूश्याम जी का विशाल मेला लगता है। इस मेले में देश-विदेश से भक्त और पर्यटक बाबा खाटू श्याम जी के दर्शन के लिए बसों, गाड़ियों से व पैदल चलकर आते है। खाटू गाँव के राजा के मन में आए स्वप्न और यहाँ स्थित श्याम कुंड के समीप हुए चमत्कारों के बाद खाटू श्याम मंदिर की स्थापना की गई। 1720 ईस्वी में दीवान अभयसिंह ने इस मंदिर का पुनर्निर्माण कराया। केंद्र सरकार द्वारा पर्यटन विकास हेतु 2015 में शुरू की गई स्वदेश योजना के अंतर्गत निर्मित कृष्णा सर्किट जो भगवान श्री कृष्ण से जुड़े स्थलों के विकास हेतु बनाया गया के तहत भी खाटूश्याम जी मंदिर का चयन किया गया है।

जीणमाता मंदिर

सीकर जिले में जीणमाता धार्मिक महत्व का एक गाँव है। यह दक्षिण में सीकर जिला मुख्यालय से 29 किमी. की दूरी पर स्थित है। जीण माता (शक्ति की देवी) को समर्पित एक प्राचीन मंदिर है। जीण माता का मंदिर पवित्र माना जाता है, ऐसा माना जाता है कि यह मंदिर एक हजार साल पुराना है। नवरात्रि के दौरान हिंदू महीने चैत्र और अश्विन में एक वर्ष में दो बार मंदिर पर रंगीन त्योहार आयोजित किया जाता है, जिसमें लाखों भक्त और पर्यटक भाग लेते है। बड़ी संख्या में आगंतुकों को समायोजित करने के लिए धर्मशालाओं की यहाँ उचित संख्या है। इस मंदिर के नजदीक देवी के भाई हर्ष भैरव नाथ का मंदिर पास की पहाड़ी के शीर्ष पर स्थित है। सीकर जिले के पर्यटन स्थलों में यह मंदिर काफी प्रसिद्ध है।

हर्षनाथ मंदिर

हर्षनाथ मंदिर, सीकर से 16 किमी दूर दक्षिण में अरावली पहाड़ियों पर स्थित है। यहाँ पुराना शिव मंदिर (10 वीं शताब्दी में ं निर्मित) खंडहरों के लिए प्रसिद्ध एक प्राचीन स्थल है। पुराने मंदिर का वास्तुशिल्प प्रदर्शन यहाँ अभी भी देखा जा सकता है। 18 वीं शताब्दी में सीकर के राजा शिव सिंह द्वारा निर्मित एक अन्य शिव मंदिर, हर्षनाथ मंदिर के पास स्थित है।

हजरत ख्वाजा हाजी मुहम्मद नजमुद्दीन सुलेमानी चिश्ती अल-फारूकी दरगाह :-

हजरत ख्वाजा गरीब नवाज और हजरत सूफी हमीदुद्दीन नागौरी की भूमि के औलिया-ए-एकराम के बीच एक प्रसिद्ध नाम है, जो महान सिल्सीलाह-ए-चिश्ती से ताल्लुक रखते है। उनकी पवित्र दरगाह सीकर जिले में फतेहपुर में स्थित है, जो जयपुर से 165 किमी दूर है और एनएच-52 पर सीकर से 55 किमी दूर फतेहपुर में है।

इन्होंने 13 वीं शताब्दी में देश के सभी हिस्सों में चिश्ती सिलसिला फैलाने में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। हर वर्ष इनकी दरगाह पर उर्स भी लगता है। जिसमें बड़ी संख्या में जियारीन भाग लेते हैं।

राणी सती का मंदिर

झुंझुनूं स्थित रानी सती मंदिर एक धार्मिक स्थल, एक विरासत, पर्यटक स्थल और एक धर्मार्थ संगठन भी है। बेहतरीन वास्तुकला वाला यह मंदिर यहाँ आने वाले सैलानियों को आश्चर्यचकित करने का काम करता है। यह एक अद्भुत मंदिर है, जिसके अंदर कई शाही इमारतें और भव्य मूर्तियां स्थापित हैं। यहाँ सैलानियों के ठहरने की भी व्यवस्था है। आध्यात्मिकता के साथ यहाँ और भी शानदार अनुभव प्राप्त होता है।

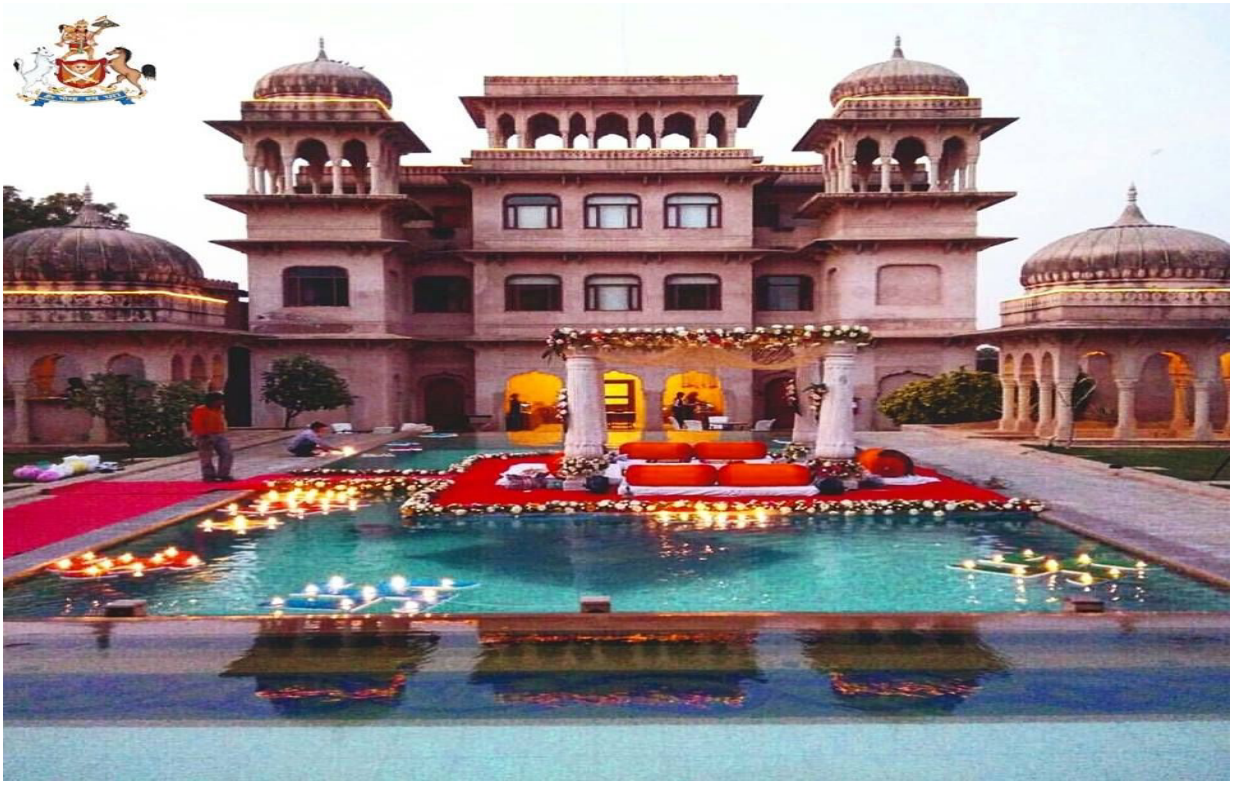

लोहार्गल मेला

झुंझुनूं जिले के दक्षिण में जिला मुख्यालय से लगभग 60 कि.मी. दूर अरावली पर्वत श्रंखला में स्थित यह पवित्र स्थल सीकर-नीमकाथाना सड़क मार्ग पर सीकर से लगभग 35 किमी. दूर हैं। यहाँ का अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य दर्शनीय हैं। भाद्रपद माह में कृष्ण जन्माष्टमी से अमावस्या तक प्रत्येक वर्ष लोहार्गल के पहाड़ों में ें लाखों नर-नारी पैदल परिक्रमा करते हैं, और अमावस्या के दिन सूर्य कुंड में पवित्र स्नान के साथ यह 'फेरी' विधिवत संपन्न होती हैं। सूर्य कुंड के निकट ही मालखेत मंदिर स्थित है। जिसमें सूर्यकुंड में स्नान के बाद लोग पुण्य का लाभ प्राप्त करते हैं।

रामेश्वर दास का मन्दिर

खेतड़ी के निकट हरियाणा राज्य की सीमा पर जिले का टीबा-बसई गाँव है जहाँ बाबा रामेश्वर दास का मन्दिर दर्शनीय है, इस मन्दिर में अति विशाल मूर्तियाँ, दीवारों पर अंकित गीता व अन्य धर्म ग्रंथों के पवित्र श्लोक और मन्दिर के विशाल परिसर की भव्यता एक अपूर्व झाँकी के समान है।

शक्कर पीर बाबा की ऐतिहासिक दरगाह

झुंझुनूं से 40 किलोमीटर दूर जयपुर-पिलानी सड़क मार्ग पर चिड़ावा से 7 किलोमीटर सड़क मार्ग नरहड़ तक जाता है, यह स्थान केवल शेखावाटी और राजस्थान का ही नहीं अपितु भारत वर्ष का गौरवशाली स्थल है ़यहाँ हर वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी पर शक्कर पीर बाबा का विशाल मेला भरता है। इस तरह की मिसाल अन्यत्र देखने को नहीं मिलती हैं। नरहड़ में शक्कर पीर बाबा की ऐतिहासिक दरगाह है, जहाँ हिंदू और मुस्लिम दोनों ही श्रद्धा के साथ आते हैं। विशाल एवं भव्य बुलंद दरवाजे से होकर दरगाह शरीफ तक पहुँचा जाता है, जहाँ एक आयताकार चौक में मानसिक विकृति वाले लोगों के शरीर पर पवित्र मिट्टी रगड़ी जाती है, कहते हैं, ऐसा करने पर उन्हें

विक्षिप्तावस्था से मुक्ति मिल जाती है। यह गाँव चिड़ावा पंचायत समिति का ग्राम पंचायत मुख्यालय है, यहाँ यात्रियों के आवास के लिए धर्मशाला और तिबारे बने हुए हैं।

कमरुद्दीन शाह की दरगाह

कमरुद्दीन शाह की दरगाह झुंझुनूं शहर में स्थित है। जिसका विशाल और विहंगम परिसर देखने लायक है।

मनसा माता मन्दिर

झुंझुनूं जिला मुख्यालय से 53 किमी. दूर तथा सीकर-नीमकाथाना सड़क मार्ग से 10 किमी. दूर उदयपुरवाटी तहसील में अरावली की सुरम्य पहाड़ियों में स्थित हैं।

चंचलनाथ टीला

चंचलनाथ टीला झुंझुनूं शहर में चिड़ावा मार्ग पर सेठ नेतराम मघराज टीबड़ेवाल राजकीय महिला महाविद्यालय के पास स्थित है। यह संत चिमननाथ महाराज का समाधि स्थल है।

बिहारीजी मंदिर

बिहारीजी मंदिर झुंझुनूं शहर में स्थित हैं। यह इस क्षेत्र का नवीनतम मंदिर हैं। जिसमें अद्भूत प्राकृतिक दृश्य दर्शाये गये हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन

सांस्कृतिक पर्यटन किसी देश या क्षेत्र विशेष की संस्कृति के साथ-साथ उस भौगोलिक क्षेत्र में लोगों की जीवन शैली, उनका इतिहास, उनकी कला, वास्तुकला, धर्म उत्सव, त्यौंहार, मेले, समुदाय विशेष की परम्पराओं और उनके मूल्यों को दर्शाने वाला पर्यटन है।

शेखावाटी में यहाँ मनाए जाने वाले प्रमुख त्यौंहार तीज, गणगौर, होली, दिवाली, नवरात्रि (वर्ष में दो बार) हैं।

शेखावाटी महोत्सव यहाँ का एक वार्षिक कार्यक्रम है, जिसका आयोजन मोरारका फाउंडेशन द्वारा हर साल फरवरी के महीने में किया जाता है। शेखावाटी महोत्सव पिछले 18 वर्षों से नवलगढ़ (झुंझुनूं) में आयोजित किया जा रहा है। इस महोत्सव में शेखावाटी क्षेत्र के प्रसिद्ध गींदड़ एवं कच्छी घोड़ी नृत्य की प्रस्तुति पर्यटकों का मन मोह लेती है।

मेले

शेखावाटी हस्तशिल्प एवं पर्यटन मेला

झुंझुनूं में शेखावाटी हस्तशिल्प एवं पर्यटन मेले का आयोजन जनवरी-फरवरी महीने में ग्रामीण हॉट क्षेत्र आबूसर में किया जाता है। इसमें बालक-बालिकाओं की अंतर महाविद्यालय एवं अंतर विद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता आयोजित की जाती हैं। इसके अलावा हस्तशिल्प वस्तुओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाती है।

जीण माता मेला

जीण माता का मंदिर सीकर जिले में स्थित है। जो जयपुर 108 किलोमीटर तथा सीकर से 29 किलोमीटर दक्षिण में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या -52 पर स्थित है। यह राजस्थान में देवी माँ का एक ऐसा मंदिर है, जहाँ माँ भक्तों के हाथों से प्रसाद के रूप में शराब पीती हैं। कहा जाता है कि जीण माता के इस मंदिर को तुड़वाने के लिए मुगल बादशाह औरंगजेब ने हमला किया। उसने अपने सैनिकों को भेजा था। इन सैनिकों को देखकर गाँव वाले बुरी तरह डर गए। इसके बाद उन्होंने सैनिकों से मंदिर न तोड़ने की गुहार लगाई। लेकिन जब बात नहीं बनी तो मंदिर में माता की आराधना करने लगे।

मान्यता है कि गाँव वालों की प्रार्थना को जीण माता ने सुन लिया था। उन्हीं के प्रताप से मंदिर तोड़ने आए सैनिकों पर मधुमक्खियों का झुँड टूट पड़ा। इससे घबराए सैनिक वहाँ से भाग खड़े हुए। इसके बाद से लोगों की श्रद्धा इस मंदिर पर और भी बढ़ गई।

कहा जाता है कि एक बार औरंगजेब बुरी तरह बीमार पड़ गया था। अपनी हरकतों पर अफसोस जताते हुए वो माफी मांगने जीण मंदिर पहुंचा। उसने यहाँ जीण माता से माफी माँगी और एक अखंड दीपक के लिए हर महीने सवा मन तेल चढ़ाने का वचन दिया। तभी से मुगल बादशाह की इस मंदिर में आस्था हो गई।

जीण माता मंदिर में हर वर्ष चैत्र सुदी एकम् से नवमी तक और आसोज सुदी एकम् से नवमी में दो मेले लगते है। इसमें लाखों की संख्या

में श्रद्धालु आते हैं। जीणमाता मेले के अवसर पर राजस्थान के बाहर से भी लोग आते हैं। राजस्थान के सुदुर इलाकों से आये बालकों का जडूला (केश मुण्डन) उतरवाते हैं। रात्रि जागरण करते हैं और दान देते है। मंदिर में बारहों मास अखण्ड दीप जलता रहता है।

खाटूश्यामजी मेला

खाटू खाटूश्यामजी का मंदिर सीकर जिले में जयपुर से करीब 115 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-52 पर स्थित है। खाटू में खाटूश्यामजी के फाल्गुन मेले में राजस्थान ही नहीं, अपितु दुनियाभर से लाखों श्रद्धालु आते हैं। खाटूश्यामजी का मेला पूरे विश्व में विख्यात है। खाटू मंदिर में पाण्डव महाबली भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र वीर बर्बरीक का शीश विग्रह रूप में विराजमान है। बर्बरीकजी को उनकी अतुलनीय वीरता एवं त्याग के कारण भगवान श्री कृष्ण से वरदान मिला था कि कलियुग में बर्बरीक स्वयं श्री कृष्ण के नाम एवं स्वरूप में पूजे जाएंगे। इसलिए बर्बरीक श्री श्याम बाबा के रूप में खाटू धाम में पूजे जाते हैं।

बर्बरीक जी का शीश फाल्गुन शुक्ल एकादशी को प्रकट हुआ था, लिहाजा इस उपलक्ष्य में फाल्गुन मास में शुक्ल पक्ष की दशमी से द्वादशी तक यहाँ विशाल मेला लगता है, जिसमें विश्वभर से लाखों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए आते है। यह मेला फाल्गुन शुक्ल दशमी से द्वादशी तक तीन दिनों तक चलता है एवं यह होली से कुछ समय पूर्व ही लगता है। श्याम बाबा की महिमा का गुणगान पूरे विश्व में होता है।

मेले के दौरान लाखों श्रद्धालु श्रीश्याम प्रभु को अपनी विनयांजलि देने के लिए एकत्र होते हैं। भक्तों के बड़े-बड़े दल पदयात्रा करते श्री श्याम प्रभु के गीत एवं जयकारे लगाते खाटू की ओर उमड़े आते हैं। इस यात्रा को 'निशान यात्रा' भी कहा जाता है। मेले के दौरान लाखों भक्त्त श्री श्याम को निशान (ध्वज) अर्पित करते हैं। कहा जाता है कि श्री श्याम को निशान अर्पित करने से श्याम हमारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। भक्त श्री श्याम के उपनामों के उल्लेख से उनका महिमा का वर्णन एवं उनके प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते चलते हैं।

मेले के समय श्रद्धालु श्याम कुण्ड में डुबकी भी लगते लगाते हैं। श्याम कुण्ड वही स्थान है, जहाँ श्री श्याम का शालिग्राम विग्रह प्राप्त हुआ था। कहते हैं की श्याम कुण्ड के जल में आरोग्य कारक और पापों का नाश कर देने की शक्ति है। अतः इसे बहुत पवित्र माना जाता है। मेले के दौरान खाटू में भक्तों के भोजन के लिये व्यवस्था बड़े स्तर पर की जाती है और खाटू आने वाले सभी यातायात के साधन बढ़ा दिए जाते हैं। यह मेला समाज में न केवल धार्मिक एकता का प्रतीक है, बल्कि समाज में शक्ति, एकता एवं उत्साह को भी दर्शाता है।

सालासर बालाजी मेला

सालासर बालाजी मंदिर भगवान हनुमान के भक्तों के लिए एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। यह राजस्थान के चूरू जिले में सुजानगढ़ पंचायत समिति के सालासर कस्बे में स्थित है। यह जयपुर - बीकानेर राजमार्ग पर जयपुर से 171 किमी. तथा सीकर से 57 किलोमीटर, और लक्ष्मणगढ़ से 30 किलोमीटर की दूरी पर जोधपुर मार्ग पर स्थित है। वर्ष भर में असंख्य भारतीय भक्त दर्शन के लिए सालासर धाम जाते हैं।

हर वर्ष चैत्र पूर्णिमा और आश्विन पूर्णिमा पर बड़े मेलों का आयोजन किया जाता है। श्री हनुमान जयन्ती का उत्सव हर साल चैत्र शुक्ल चतुर्दशी और पूर्णिमा को मनाया जाता है। श्री हनुमान जयन्ती के इस अवसर पर भारत के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालु यहाँ पहुँचते हैं। भाद्रपद शुक्लपक्ष चतुर्दशी और पूर्णिमा पर आयोजित किये जाने वाले मेले भी बाकी मेलों की तरह आकर्षक होते हैं। इन अवसरों पर निःशुल्क भोजन, मिठाईयों और पेय पदार्थों का वितरण किया जाता है।

भारत में यह एकमात्र बालाजी का मंदिर है, जिसमे बालाजी के दाढ़ी और मूँछ है। बाकि चेहरे पर राम भक्ति में राम आयु बढ़ाने का सिंदूर चढ़ा हुआ है। कहा जाता है इस मंदिर का निर्माण मुस्लिम कारीगरों ने किया था, जिसमे मुख्य थे-फतेहपुर से नूर मोहम्मद व दाऊ। हनुमान सेवा समिति, मंदिर और मेलों के प्रबन्धन का काम करती है। यहाँ रहने के लिए कई धर्मशालाएँ और खाने-पीने के लिए कई जलपान-गृह (रेस्तराँ) हैं। श्री हनुमान मंदिर सालासर कस्बे के ठीक मध्य में स्थित है। वर्तमान में सालासर हनुमान सेवा समिति ने भक्तों की तादाद बढ़ते देखकर दर्शन के लिए अच्छी व्यवस्था की है।

राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की नियमित बस सेवा के द्वारा दिल्ली, जयपुर और बीकानेर से भली प्रकार से जुड़ा है। इंडियन एयरलाइंस और जेट एयर सेवा जो जयपुर तक उड़ान भरती हैं, यहाँ से बस या टैक्सी के द्वारा सालासर पहुँचने में 3.5 घंटे का समय लगता है। सुजानगढ़, सीकर, डीडवाना, जयपुर और रतनगढ़ सालासर बालाजी के नजदीकी रेलवे स्टेशन हैं।

शाकंभरी (सकराय) माता मेला

देशभर में मां शाकंभरी के तीन शक्तिपीठ हैं। पहला प्रमुख पीठ राजस्थान के सीकर जिले में उदयपुरवाटी के पास सकराय माताजी के नाम से स्थित है। दूसरा स्थान राजस्थान में ही जयपुर जिले के सांभर कस्बे में शाकंभर के नाम से स्थित है और तीसरा स्थान उत्तरप्रदेश

जय माता दी

के मेरठ के पास सहारनपुर में 40 किलोमीटर की दूर पर स्थित है।

मां शाकंभरी की पहली प्रमुख पीठ राजस्थान के सुरम्य घाटियों के बीच बना शेखावाटी प्रदेश के सीकर जिले में स्थित है। कहा जाता है कि महाभारत काल में पांडव अपने भाइयों व परिजनों का युद्ध में वध (गोत्र हत्या) के पाप से मुक्ति पाने के लिए अरावली की पहाड़ियों में रुके थे। युधिष्ठिर ने पूजा-अर्चना के लिए देवी मां शकराय की स्थापना की थी, वहीं अब शाकंभरी तीर्थ है।

श्री शाकंभरी माता का यह सकराय गाँव अब आस्था का केंद्र बन चुका है। यह मंदिर सीकर से 56 किमी दूर अरावली की हरी वादियों में बसा है। झुंझनूं जिले के उदयपुरवाटी के समीप यह मंदिर उदयपुरवाटी गाँव से 16 किमी दूरी पर है। यहाँ के आम्रकुंज, स्वच्छ जल का झरना आने वाले भक्तों का मन मोह लेते हैं। आरंभ से ही इस शक्तिपीठ पर नाथ संप्रदाय का वर्चस्व रहा है, जो आज तक भी कायम है।

यहाँ देवी शकराय, गणपति तथा धन स्वामी कुबेर की प्राचीन प्रतिमाएं भी देखने को मिलती हैं। इस मंदिर के आसपास जटाशंकर मंदिर तथा श्री आत्ममुनि आश्रम भी हैं। नवरात्रि के दौरान 9 दिनों में यहाँ उत्सव का आयोजन होता है। सालभर इस मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहता हैं।

लोहार्गल मेला

राजस्थान में शेखावाटी इलाके के झुन्झुनूं जिले से करीब 70 किमी. दूर आड़ावल पर्वत की घाटी में बसे उदयपुरवाटी कस्बे से करीब दस किमी. की दूरी पर लोहार्गल धाम स्थित है। लोहार्गल का अर्थ है- वह स्थान जहाँ लोहा गल जाए। पुराणों में भी इस स्थान का जिक्र मिलता है। नवलगढ़ तहसील में स्थित इस तीर्थ 'लोहार्गल जी' को स्थानीय अपभ्रंश भाषा में लुहागरजी कहा जाता है।

महाभारत युद्ध समाप्ति के पश्चात पाण्डव जब अपने भाई बंधुओं और अन्य स्वजनों की हत्या करने के पाप से अत्यंत दुःखी थे, तब भगवान श्रीकृष्ण की सलाह पर वे पाप मुक्ति के लिए विभिन्न तीर्थ स्थलों के दर्शन करने के लिए गए। श्रीकृष्ण ने उन्हें बताया था कि जिस तीर्थ में तुम्हारे हथियार पानी में गल जाए वहीं तुम्हारा पाप मुक्ति का मनोरथ पूर्ण होगा। घूमते-घूमते पाण्डव लोहार्गल आ पहुँचे तथा जैसे ही उन्होंने यहाँ के सूर्यकुण्ड में स्नान किया, उनके सारे हथियार गल गये। उन्होंने इस स्थान की महिमा को समझ इसे तीर्थ राज की उपाधि से विभूषित किया। लोहार्गल से भगवान परशुराम का भी नाम जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि इस जगह पर परशुराम जी ने भी पश्चाताप के लिए यज्ञ किया तथा पाप मुक्ति पाई थी। विष्णु के छठें अंश अवतार ने भगवान परशुराम ने क्रोध में क्षत्रियों का संहार कर दिया था, लेकिन शान्त होने पर उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ। यहाँ एक विशाल बावड़ी भी है, जिसका निर्माण महात्मा चेतनदास जी ने करवाया था। यह राजस्थान की बड़ी बावड़ियों में से एक है। पास ही पहाड़ी पर एक प्राचीन सूर्य मन्दिर बना हुआ है। इसके साथ ही वनखण्डी जी का मन्दिर है। कुण्ड के पास ही प्राचीन शिव मन्दिर, हनुमान मन्दिर तथा पाण्डव गुफा स्थित है। इनके अलावा चार सौ सीढ़ियाँ चढ़ने पर मालखेत जी के दर्शन किए जा सकते हैं।

इस प्राचीन, धार्मिक, ऐतिहासिक स्थल के प्रति लोगों में अटूट आस्था है। भक्तों का यहाँ वर्ष भर आना-जाना लगा रहता है। यहाँ समय-समय पर विभिन्न धार्मिक अवसरों जैसे ग्रहण, सोमवती अमावस्या आदि पर मेला लगता है किंतु प्रतिवर्ष कृष्ण जन्माष्टमी से अमावस्या तक आयोजित होने वाले विशाल मेले का विशेष महत्व है, जो पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहता है। श्रावण मास में भक्तजन यहाँ के सूर्यकुंड से जल से भर कर कांवड़ उठाते हैं। यहाँ प्रति वर्ष माघ मास की सप्तमी को सूर्यसप्तमी महोत्सव मनाया जाता है, जिसमें सूर्य नारायण की शोभायात्रा के अलावा सत्संग प्रवचन के साथ विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है। यहाँ चौबीस कोसीय परिक्रमा भी की जाती है। परिक्रमा के बाद नर-नारी कुण्ड में स्नान कर पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं।

निष्कर्ष :-

पर्यटन के क्षेत्र में हमें पर्यटन और पर्यटन स्थलों की श्रेणी का भी अध्ययन करना पड़ता है, क्योंकि इस ज्ञान के बिना हम न तो पर्यटकों के अनुसार सुविधाओं की व्यवस्था कर सकते हैं और न ही पर्यटन स्थलों की जानकारी उनकी रुचि और साधन के अनुसार दे सकते हैं साथ ही पर्यटन चक्र बनाने के लिए ये दोनों चीजें जरूरी हैं। प्रत्येक स्तर के पर्यटक के लिए एक अलग यात्रा चक्र का सुझाव दिया जाता है। यह उनके अनुसार होना चाहिए । यह तभी संभव है जब इन पहलुओं को सामने रखते हुए यह चक्र बनाया जाए। इस प्रकार कार्य की दृष्टि से आज यह सौदे की तरह क्रय-विक्रय के दायरे में प्रवेश कर रहा है। अतः पर्यटक और पर्यटन सामग्री दोनों का परस्पर महत्त्व होना स्वाभाविक है। सीकर, झुंझुनूं व चुरू जिलों में पर्यटन विकास हेतु पर्याप्त पर्यटन सुविधाएँ विकसित हैं । राजस्थान के पर्यटन विभाग ने "पधारो म्हारो देश" का आकर्षक आमत्रंण देकर पर्यटन विकास के लिए सरकार का सकंल्प प्रकट किया हैं। राजस्थान में पर्यटन उद्योग के महत्व को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा स्वदेशी व विदेशी पर्यटको को आकर्षित करने के लिए समय-समय पर यथोचित प्रयास किये जाते रहे हैं। राजस्थान में पर्यटन के बढ़ते महत्व को देखते हुए ही केन्द्र एवं राज्य सरकारें अब इस उद्योग पर विशेष ध्यान दे रही है। वैसे भी हीरे-जवाहरात एवं रेडीमेड गारमेन्ट, वस्त्र उद्योग के बाद पर्यटन ही देश का एक मात्र सबसे बड़ा उद्योग है जिससे राष्ट्र को सर्वाधिक विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। देश में पर्यटन का उद्योग के रूप में विकास शनैःशनैः हुआ। इस प्रकार 2020 का वर्ष राजस्थान के लिए पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में का काफी उत्तम रहा जिसके कारण इस वर्ष राजस्थान पर्यटन को विभिन्न पुरस्कारो से नवाजा गया ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बोराणा रमेश :- "राजस्थान के कला गौरव, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर।

2. गर्ग बीएल "राजस्थान का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन", प्रकाशकः शिव पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

3. गर्ग दामोदर लाल :- "अलवर राज्य का इतिहास" अनु प्रकाशन, 958 धामानी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता अलवर।

4. गोस्वामी डॉ. प्रेमचंद राजस्थान सांस्कृतिक कला एवं साहित्य, - प्रकाशकः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर

5. राठौड़ विक्रम सिंहः- "राजस्थान की सांस्कृतिक इतिहास", राजस्थानी साहित्य संस्थान, जयपुर।

6. राजस्थान पर्यटन नीति, पर्यटन कला संस्कृति विभाग, जयपुर।

7. राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित ब्रोशर्स।

8. सक्सेना शालिनीः- राजस्थान के लोक तीर्थ" श्याम प्रकाशन जयपुर

9. शर्मा भारती :- "अलवर के मंदिरः सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन" (थीसिस, 1993) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

10. दि हैरिटेज वेल्थ ऑफ राजस्थान राजस्थान, टूरिज्म आरटीडीसी, जयपुर।